i:xfr"khy p:ruk d: egkuk;d v..kk HkkÅ lkB:

ik- yV: ekjkrh Hkkjrko
हिंदी विभाग
प्रतिभा निकेतन महाविद्यालय, नांदेड

''जग बदल घालुनी घाव
मला सांगून गेले भिमराव''[01]

मानवतावादी विचारों के जननायक लोक" ाहीर अन्ना भाऊ साठे महाराश्ट्र के प्रगति" ील समाज सुधारक महात्मा जोतीबा फूले, भारतरत्न डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर एवं राजर्शी भााहू महाराज के राह पर चलनेवाले समाज सुधारक थे। डॉ. आंबेडकर जहां गुलामों को गुलामी का एहसास होने के बात करते हैं, वहां अन्ना भाऊ स्वयं को गुलाम समझने वाले दलित, भाोशित एवं उपेक्षित समाज को 'तुम गुलाम नहीं तो यथार्थ वि" व के निर्माता हो' कहते थे। उन्होंने समाज परिवर्तन के लिए आम लोगों को लोककलाओं के माध्यम से सचेत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। पोवाडा, लावणी, गवळण एवं लोकनाटय द्वारा अपने प्रगति" ील विचारों से संबेधित किया। इतना ही नहीं तो उन्होंने मराठी भाशा की लोकप्रिय विधाएँ कहानी, उपन्यास एवं नाटक में अपनी परीवर्तनवादी कलम चलाकर सामान्य काश्तकार, दलित, भाोशित, पिडीत स्त्री–पुरुश को अपने साहित्य का केंद्र बनाया। यही कारण है कि लोक" ाहीर अन्ना भाऊ साठे जी को दा" ानिक रुप में प्रगति" ील चेतना के महानायक कहा जाता है।

अन्नाजी भाऊ साठे का मुल नाम तुकाराम भाऊराव साठे है। लोग उन्हें अन्ना के नाम से जानते है। भाऊराव उनके पिताजी का नाम है। उनका जन्म 01 अगस्त 1920 को सांगली जिले के वाटेगाव नामक छोटेसे कस्बे में हुआ। तत्कालीन जाति–भेद के कारण अन्नाजी को एक दिन में ही पढ़ाई छोडनी पडी। उनके जीवन की महत्वपूर्ण बात यह है कि केवल एक दिन ही पाठ" ाला में जाने बाद भी अन्ना भाऊ साठे जी ने मराठी भाशा में 35 उपन्यासों का सृजन किया। इतना ही नहीं तो उन्होंने लोककलाओं के साथ–साथ 12 फिल्म पटकथाओं का लेखन भी किया। उनके साहित्यिक प्रभाव के कारण 27 भाशाओं में उनके साहित्य अनुवाद किया गया। उन्होंने प्रतिकुल परिस्थिति में संघर्शकर भाोशित एवं पीडितों के जीवन को अपने साहित्य में वाणी प्रदान की। मानवी जीवन में समता एवं मानवता स्थापित करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया।

अन्ना भाऊ साठे राजनीति में कम्युनिश्ठ विचार धारा के समर्थक थे। लेकिन वे डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर की विचारधारा का निर्वहन भी करते थे। दलितों के लिए उन्होंने अपना योगदान दिया।

बाबासाहेब का मंत्र 'पढो, संघटित बनो और संघर्श करो' की भावना को अपने पोवाडे माध्यम से लोगों तक पहूँचाया–

''एक जूटीच्या या रथावस्ती
आरुढ होऊन चला पुढती
नव महाराश्ट्र निर्मून जगती
करी प्रगट नीज नाव''[02]

भाोशितों में भाोशित भारतीय स्त्री के प्रति उनके मन में आदर की भावना थी। स्त्री पर होनेवाले अत्याचार लोकनाटय के माध्यम से समाज के सम्मुख व्यक्त किए। समाज चेतना को स्त्री के संदर्भ में झकझोर ने का कार्य किया। सदियों से स्त्री जाति पर होनेवाले अत्याचारों को पोवाडा, लावणी में वाणी प्रदान की। यह साहित्य आज भी पूरी तरह से प्रासंगिक है। अन्ना भाऊ '" ाहीर' नामक पोवाडा संग्रह में स्त्री अत्याचार के संबंध में कहते हैं–

''ओढुनी नारी रस्त्यावरी करती बलात्कार।
देऊन कंठी नख भोवटी मारीती त्या ठार''[03]

वर्तमान में भी अन्नाजी के यह विचार यथार्थ के धरातलपर सामर्थ" ाली सिध्द होते हैं। भारत दे" ा में जिस स्त्री पर अत्याचार होता है, या किया जाता है। वह केवल अत्याचार करने तक सिमित नहीं रहता तो उसे अमानवीयता से निदर्य होकर मार दिया जाता हैं जिस के खिलाफ अन्नाजीने आवाज उठाई। पर स्त्री को माँ के समान माननेवाले छत्रपती ि" ावाजी महाराज से अन्नाजी प्रभावित थे। वे अपना पोवाडा प्रारंभ करने से पहले परंपरा के अनुसार देवी देवताओं को नमन नहीं करते थे। देवी–देवताओं के अडंबर को छोड महामानवों को याद करते थे। उदाहरण दृश्टव्य है–

''प्रथम वंदन मायभूच्या चरणा
छत्रपती ि" ावबाच्या चरणा
स्मरोनी गातो या कवणा
जी जी जी जी।''[04]

अन्नाभाऊ साठे उन्नीसवी सदी के उत्तुंग व्यक्तित्व थे। जिन्होंने समाज परिवर्तन की ध्येयपूर्ति हेतु प्रबोधन के लिए अपना जीवन समर्पित किया। वे सामाजिक क्रांती के नायक थे। इसलिए वे महात्मा बुध्द, महात्मा फुले, डॉ. बाबासाहब आंबेडकर, छत्रपति ि" ावाजी महाराज तथा राजर्शि भााहु महाराज आदि के उत्तराधिकारी थे। उनका यह समर्पित जीवन आज के युग का प्रेरणास्त्रोत है। समताधिश्ठित समाज निर्मिती के लिए उन्होंने आंदोलन आरंभ किया। गरीब, मजदूर का भूख से बेहाल होता हुआ उन्होंने अपनी आँखों से देखा। अकाल में गाँव–गाँव प्रबोधन कर सहायता की याचना की। अकाल का चित्रण करते हुए अन्नाजी कहते हैं–

''भूकेला झाली सुरवात। खेडया पाडयात। वंग प्रांतात
छोटी–मोठी गाव आली आधिपत्यात। भूख पसरली सर्व प्रांतात।
उद्योग धंदयाच्या सर्व भाहरात।''[05]

अन्नाजी साठे के भााहीरी में अकाल का ह्रदयद्रावक चित्रण प्राप्त होता है। जीवन की जर्जर स्थितियाँ भूख की भयावहता से खाली हूए गाँवो की भीशणता को अन्नाजी ने भााहीरी के माध्यम से अभिव्यक्त किया। तात्पर्य, यह की अन्नाजी के साहित्य के विशय कल्पनिक पर नहीं तो यथार्थ थे। उनके संदर्भ में अनुसंधानक श्री बी. एम. पाटील कहते हैं– ''जनते" ाी बांधिलकी पत्करलेल्या अन्ना भाऊंनी हेतु पूर्वकच जनतेच्या प्रबोधनासाठी भााहीरी वाङमय निर्माण केले. जाती भेद, अंधश्रध्दा, दैववाद, आदिवाद यावर वर्गीय राजकारणाचा समाजवादी विचारांचा मानवतावादाचा प्रचार–प्रसार करने, वर्गसंघर्शाची प्ररणा देणे, आंतराश्ट्रीय वर्गीय भातृभाव वृध्दींगत करणे हाच अन्ना भाऊंच्या भााहीरी वाङमयाचा हेतु होता।''[06] अर्थात, अन्ना भाऊ साठे अंधवि" वास एवं दैववाद पर वि" वास न कर वैज्ञानिक दृश्टि से समाज प्रबोधन करते थे।

महाराश्ट्र की राजधानी का भाहर मुंबई में अन्नाजी ने मजदूरों के लिए व्यापक स्वरुप में आंदोलन प्रारंभ किया। दीन–दलित मजदूरों के प्रति उन्हें स्नेह था। पुंजिपति एवं मजदूरों के बीच का संघर्श, कंपनी के मालिकों की दंडेल" ााही के प्रति अन्ना ने तीव्र आक्रे" ा प्रकट किया। आपातकालीन परिस्थियों में पुंजीपति एवं जमीनदारों ने अन्न के गोदाम भरकर रखे, सामान्य मजदूरों को अन्न–अन्न के लिए मोहताज किया। उन्हें काम पर नहीं रखा और नहीं खाने को कुच्छ दिया। उनकी इस अवस्था को अन्ना भाऊ साठे ने अपने भााहीरी में पे" ा किया–

''गरीबाला आणिबाणीचा। वक्त हा आला
कपडा गेला सासर वाडीला। तेलान पळ काढला
कुठं बसला साखऱ्या। ठाव नाही मला
पळापळी चारी बाजूला। पाठि" ावी खेळ यालला
सरकारी नियंत्रण कायदा आला टेकीला
कुठे दडले साठेबाज काही कळेना त्याला।''[07]

अन्ना भाऊ साठे अपने लोक कलाओं के माध्यम से आम जनता के मसिहा बनकर भाोशित पिडित मजदूरों का, सर्वहारा वर्ग का नेत्त्व करने लगे। उनके वैचारिक अधिश्ठान एवं क्रांतीकारी भाशा प्रयोग के कारण उनका व्यक्तित्व कम समय में भी लोकप्रिय बन गया। उनका नेत्त्व मजदूरों को न्याय देणे के लिए सामर्थ्य" ााली सिध्द हुआ। उनके संबंध में ॲडम थॉमस कहता है–

"Annabhau sathe prouduced a propraganda litre ture like powada laoani gondhal ramatik songs this letrature reveals his entire faithin his motherland and deep lone for the

dalit and downtraddens but at the same time he did not leave the dulting class and the capitalists scolt free”[08]

निश्कर्श–

अन्ना भाऊ साठे जी ने अपने प्रबोधन कार्य के लिए पोवाडा इस लोक साहित्य को अपनाकर बडे पैमाने में प्रसार एवं प्रचार किया। उनके प्रसिध्द पोवाडा साहित्य में 'स्टालिनचा ग्राड पवाडा', 'बर्लिचा पोवाडा', 'बंगालची हाक', 'पंजाब दिल्लीचा दंगा', 'महाराश्ट्राची परंपरा', 'मुंबई गिरणीचा कामगार' एवं 'काळा बाजार' आदि बहूचर्चित हैं। उन्होंने अपने पोवाडा साहित्य के द्वारा राश्ट्रीय–आंतरराश्ट्रीय समस्याओं का चित्रण किया। कम्युनिश्ठ आंदोलन में अन्नाजी साठे के साहित्य का भरकर प्रयोग किया गया। उनके साहित्य में साम्यवाद का आग्रह के साथ–साथ यथार्थ समाज व्यवस्था का द” िन होता हैं पृथ्वी भोशनाग के सर पर नहीं तो आम मजदूरों के हाथों पर है।' यह मौलिक विचार लोगों तक पहूँचाया। अतः अन्नाजी सामाजिक भाोशण, सम्माजिक अन्याय के खिलाप लढनेवाले योध्दा थे। इसलिए ही उन्हें प्रगति” ाील विचार धारा के महानायक कहा जाता है।

I nHk I dr &

1) भाहीर, अन्ना भाऊ साठे, मनोविकास प्रका” ान, 1985, मुंबई पृ. 112

2) वही पृ. 112

3) वही पृ. 77

4) वही पृ. 62

5) वही पृ. 83

6) कलंदर प्रेशीत, बी. एम. पाटील, लो. अ. भा. साठे, प्रतिश्ठान, 1991, कोल्हापूर, पृ.99

7) भाहीर, अन्ना भाऊ साठे, मनोविकास प्रका” ान, 1985, मुंबई, पृ. 94

8) एव्हीलु” ान ऑफ दी प्लो, अडॅम थॉमस, ऑ” ायाटिक सोसायटी पब्लीके” ान, 1985, पृ. 174